भारतीय-साहित्य के परिप्रेक्ष्य में हिंदी और बंगला साहित्य

प्रो० रूबी ज़ुत्शी

भारतीय साहित्य एक ऐसे वट वृक्ष की तरह है जो अपने विस्तृत परिवेश में बहुत कुछ समेट कर अपनी छाया में न जाने कितने लोगों को एक लम्बे समय से सुकून दे रहा है | जिस तरह वटवृक्ष की शाखाओं का विस्तार इतना विस्तृत हो जाता है कि उनकी दूरी एक दूसरे से बहुत कुछ अलग भी हो जाती है और पहचान भी समयावधि पाकर कम हो जाती है, पर उनकी मूल सिंचन का मूल एक ही रहता है उसी प्रकार भारतीय साहित्य में भी सुविज्ञ जनों को अनेकता में एकता का दर्शन होता है |भारतीय साहित्य की मूल चेतना इसी वटवृक्ष की भांति भारतीय संस्कृति में मिलती है |परंपरा से वैदिक संस्कृत से लौकिक संस्कृत, प्राकृत-पाली, अपभ्रंश के विविध रूपों से निसृत आधुनिक भारतीय भाषाओं के रूप में दृष्टिगत होती है |

आधुनिक भारतीय भाषाओँ का साहित्य अपने अपने क्षेत्र तथा लिपि वैविध्य होते हुए भी अपनी मूल चेतना (भारतीय संस्कृति) से ही अपनी प्रेरणा ग्रहण करता है | यह तथ्य तभी स्पष्ट होता है जब अध्येता विभिन्न भारतीय भाषाओँ के साहित्य का संज्ञान लेते हुए अध्ययन करते हैं |इसी दृष्टि से जब मध्य भारत की भाषा कुसुमांजलि हिंदी तथा पूर्वी भारत में प्रचलित बंगाली भाषा के साहित्य को एक साथ देखते है तो स्पष्ट हो जाता है कि क्षेत्र और लिपि में अंतर होते हुए भी दोनों भाषा के साहित्य एक ही मूल संवेदना के संवाहक हैं |

हिंदी और बंगला भाषा के एतिहासिक विकास पर जब विचार किया जाता है तो विद्वानों ने इनके प्रारंभिक चरण में मिले सिद्ध

साहित्य के चर्यापद दोनों ही भाषाओं के साहित्येतिहासकार इन्हें अपने क्षेत्र के साहित्य में स्वीकार करते हैं|

पूर्ववर्ती काल में भी दोनों भाषाओँ के साहित्य में भाव साम्य मिलता है इसलिए दोनों क्षेत्रीय भाषाओँ का अध्ययन भारतीय साहित्य की मूल चेतना की भावाभिव्यक्ति में सहायक होगा |

बंगला और हिंदी भाषा का उद्दभव और विकास भारतीय आर्य भाषा से हुआ है |भारतीय आर्य भाषा का घना प्रवाह जैसे परिवर्तित होता गया यहाँ के नूतनताप्रिय मनीषियों ने भाषा को नये-नये नामों से विभूषित किया |

वैदिक, संस्कृत, मराठी,सिन्धी एवं पंजाबी आदि अनेक संज्ञाओं को ग्रहण करती हुई भारतीय आर्य भाषा अब भी एक जीवन्त भाषा है |आधुनिक आर्य भाषाओँ का जन्म अपभ्रंश के विभिन्न क्षेत्री रूपों से हुआ है |बंगला भाषा का संबंध यदि मागधी अपभ्रंश से है तो हिंदी का संबंध शौरसेनी अपभ्रंश से माना जाता है |

संस्कृत अति कठिन होने के कारण जनता से दूर होती गई तो पालि-प्राकृत सामने आई किन्तु ज्यादा देर यह भाषाएँ भी नहीं चली तो आधुनिक बंगला हिंदी आदि भाषाओं का रूप स्थिर होने लगा |इन आधुनिक भाषाओँ (बंगला-हिंदी) को हार्नले ने गौड़ीय भाषा कहा है |

संस्कृत और बंगला का संबंध असीम गहरा होने के कारण कभी-कभी पाठक को यही भ्रम होता है कि वह संस्कृत की कविता को बंगला की और बंगला की कविता को संस्कृत की कविता समझ बैठ है जैसे बंगला में आइ; संस्कृत में माता प्राकृत में अत्ता |

जहाँ तक बंगला और हिंदी भाषा की तुलना का प्रश्न है दोनों भाषाओँ का साहित्य अति असीम और विस्तृत है |इन दोनों की तुलना करना कठिन ही नहीं बल्कि असंभव भी है इसमें क्षमता और योग्यता

की आवश्यकता है | दोनों की समानताएं लेखनबद्ध करना सागर को गागर में भरने की बात है |

विद्वानों के मतभेद के अनुसार पाठक यही अनुमान लगा सकता है कि बंगला भाषा का आदि रूप आठवी से बारहवी सदी तक के अरसे में तैयार हो रहा था जबकि हिंदी का दसवी सदी से माना जाता है | बंगला को तीन कालों में विभाजित कर सकते हैं और हिंदी को चार कालों में, जिनका ब्यौरा इस प्रकार है :-

बंगला साहित्य :-

१. आदिकाल ई० 900 से 1200 ई० तक

२. मध्यकाल ई० 1200 से 1850 ई० तक

३. आधुनिककाल 1850 से अब तक |

हिंदी साहित्य :-

1.आदिकाल सन् 1050 से सन् 1375 तक

2.भक्तिकाल सन् 1375 से 1700 तक

3.रीतिकाल सन् 1700 से 1900 तक

4.आधुनिककाल सन् 1900 से आज तक

अत: बंगला के आदिकाल में लोक साहित्य, धर्म, नीति सम्प्रदाय परक साहित्य की विशेषत: लिखा गया है जबकि हिंदी के आदिकाल में आश्रयदाताओं की अतिश्योक्तिपूर्ण स्तुति, व्यापक राष्ट्रीयता का अभाव चरितकाव्य लिखने की प्रधानता, भाषा एवं छंदों की विविधता, वीर प्रधान काव्य |

विद्यापति आदिकाल की अंतिम कड़ी के कवि है | कुछ विद्वानों का मानना है यह बंगला के कवि है, क्योंकि विद्यापति नामक 'मैथिल कोकिल' ने अपनी 'पदावली' में जिस मैथिली भाषा को अपना लिया है,

उसको प्रत्ययों के आधार पर बंगला की उपभाषा मानते हुए उनको बंगला का कवि घोषित किया गया किन्तु शब्द भण्डार और क्रिया पदों के आधार पर मैथिली हिंदी के अंतर्गत ही आती है और यह हिंदी के कवि है न कि बंगला के | हाँ यह तो हमें मानना पड़ेगा कि मैथिली ने बंगला भाषा को प्रभावित किया है | मैथिली हिंदी में रचित होने पर भी 'पदावली' में बंगला का प्रभाव विद्यमान है | बंगला साहित्य में भी उतना ही सत्कार प्राप्त है जितना हिंदी में |

बंगला के मध्यकाल में जब शमसुद्दीन इलियास ने स्वतंत्र रूप से शासन की स्थापना की, तो राज्य में धीरे-धीरे शान्ति का वातावरण फ़ैल गया जिससे जनता का रूहजान विद्या, कला और साहित्य की ओर बढ़ा जिससे तीनों विधाएं धीरे-धीरे विकास की ओर बढ़ गई | इसी प्रकार हिंदी साहित्य के आदिकाल में जनता मारदाड की प्रवृति से तंग आ गई थी जिसके कारण वह शान्ति चाहते थे | हिंदी का (मध्यकाल जो भक्तिकाल या स्वर्णयुग के नाम से जाना जाता है) में जनता का रूहजान भक्ति की ओर बढ़ा जिससे उनको मन की शान्ति मिली |

दोनों भाषाओँ (बंगला और हिंदी) में इस काल में कृष्ण काव्य लिखा गया | बंगला के कवि मालाधर वसु ने सन् 1474 के लगभग 'श्री कृष्ण लीला काव्य' एवं सन् 1480 ई० के लगभग 'श्री कृष्ण विजय' नामक काव्य लिखे गये, दोनों पर जयदेव का प्रभाव है | इसके अतिरिक्त यशोराज खां ने 'कृष्ण मंगल' एवं चण्डीदास के 'कृष्णभक्ति विषयक' के पदों को बड़े सम्मान से गाया जाता है | श्री बसंतराय ने इनके पदों का संकलन 'बंगीय साहित्य परिषद्' से भी श्री 'कृष्ण कीरति' के नाम से प्रकाशित करवाया हैं | इसी शती में (1200 ई० से 1850) 'श्रीकृष्ण मंगल' रघुनाथ पण्डित ने श्रीमद्भागवत के आधार पर

'कृष्णप्रेमतरंगिनी' आदि ग्रन्थों में कृष्ण को केंद्र में रख ही लिखे गये है |

हिंदी के भक्तिकाल की दूसरी शाखा 'सगुणभक्ति शाखा' की पहली शाखा 'कृष्णभक्ति शाखा में भी इस तरह कृष्ण को केंद्र में रखकर लिखा गया है |

आचार्य निम्बार्क ने सबसे पहले विष्णु के स्थान पर कृष्ण का सगुण रूप भक्ति के लिए तैयार किया था इसके अतिरिक्त वल्लभाचार्य, सूरदास, नंददास, मीरा और रसखान आदि ने कृष्ण काव्य लिखा है |

(१८५७-१९००ई०) हिंदी में भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाम से एक युग चला है जिसको हम भारतेंदु युग कह सकते हैं | हिंदी में जो स्थान भारतेंदु जी को है वही स्थान पं० ईश्वर चन्द्र विद्यासागर को बंगला के आधुनिक गद्य साहित्य में प्राप्त हुआ है | इतना ही नहीं प्रथम निबंधकार होने का श्रेय भी इनको प्राप्त है |

(१९०० दिवेदी युग) इस युग में राष्ट्रीय काव्य धारा चली | इस धारा के प्रमुख कवि मैथिलीशरण गुप्त जी है | सियारामशरण, माखनलाल चतुर्वेदी, सोहनलाल द्विवेदी, दिनकर को भी इसी कोटि में रख सकते हैं | जिस तरह मैथिलीशरण ने नवीन और पुरानी शैली को अपना कर लिखा है उसी प्रकार बंगला साहित्य में भी राष्ट्र विषयक रचनाएँ लिखी गई हैं जिसमें ईश्वरचंद्र गुप्त का स्थान महत्वपूर्ण हैं | ईश्वरचंद्र गुप्त भी प्राचीन एवं नवीन शैली के मध्य के कवि थे | अत: दोनों काव्यों में राष्ट्रीय भावना एवं प्रेम पाया जाता है | जिस प्रकार बँगला में स्थल के नाम पर नामकरण करने की प्रवृति पाई जाती है, यही प्रवृति मैथिलीशरण गुप्त के काव्यों में भी मिलती है जिससे स्पष्ट होता है कि बंगला साहित्य से गुप्त जी प्रभावित है क्योंकि इसे

पाठक या तो कवि की मौलिकता कहिये या प्रभाव का कारण | बंगला के ईश्वरचंद्र, क़ाज़ी नजरुल इस्लाम आदि सच्चे अर्थों में राष्ट्र कवि माने जाते है |

हिंदी में प्राकृतिक सौन्दर्य का स्वछंद वर्णन भारतेंदु युगीन कविता को अंगभूत विशेषता है | भारतेंदु कृत 'बसंत होली', अम्भिकादत्त व्यास की 'पावस पचासा' गोविन्द गिल्लाभाई की 'षडऋतु' और 'पावस पयोनिधि' आदि कृतियों में बसंत ऋतु और वर्षा-काल का आलम्बनात्मक चित्रण है | बंगला के विश्व प्रसिद्ध कवि रविन्द्रनाथ ठाकुर की 'वनवाणी' और 'वीथिका' हिंदी की जयशंकर प्रसाद कृत 'कामायनी' श्रेष्टतम प्रकृति काव्य है | बंगला के करूणा निधान ने भी अपने काव्यों में प्रकृति प्रेम एवं विगत वैभव का चित्रण किया है |

(बंगला और हिंदी) दोनों साहित्य में एक ऐसा युग भी आया है जो मार्क्सवाद के नाम से जाना जाता है | जर्मनी के कार्ल मार्क्स इस युग के जन्मदाता थे |

इसी वाद का आश्य यही था कि पूँजीवाद का नाश कर संसार में आर्थिक समानता और वर्गहीन समाज की स्थापना करना | हिंदी में शिवमंगल सिंह सुमन, डॉ. रांगेय राघव, नागार्जुन, डॉ. रामविलास शर्मा, मुक्तिबोध, गिरिजाकुमार माथुर, नरेंद्र शर्मा आदि और बंगला में इस कोटि के कवि सर्व श्री गोकुलनाथ, बुद्ध देववसु, प्रेमचंद मिश्र, अचित्यसेन गुप्त, जीनानन्द दारा आदि प्रमुख थे | कुल मिलाकर इन्होंने बढई, लोहार, श्रमिक, दलित, शोषितों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हुए अपनी रचनाओं का विषय बनाया | इसके अतिरिक्त बंगला के ऊपर दिए कवियों में कुछ कवि फ्राइडवाद से प्रभावित थे | हिंदी में भी जैनेंद्र, मन्नू भण्डार, शिवानी आदि फ्राइडवाद से प्रभावित होकर ही मनोविज्ञान की कसौटी पर खरे उतरते हैं |

मन्नू भण्डारी ने 'आसमाता' और 'आँखों देखा झूठ' रचनाएँ लिखकर बाल-साहित्य पर भी अपनी लेखनी चलाई है उसी प्रकार बंगला में रविन्द्रनाथ का 'शिशुगीत' बाल साहित्य की उत्कृष्टता के लिए अति प्रसिद्द है | इसके अतिरिक्त अववीन्द्रनाथ ठाकुर, दक्षिणारंजन मिश्र, योगेन्द्र वसु, उपेन्द्र किशोरराय, सुकुमारराय, आदि ने बाल साहित्य को समृद्ध किया है |

बंगला के बाबू बंकिम चन्द्र चटोपाध्याय का जो स्थान है वही स्थान हिंदी में प्रेमचंद का भी है | इन दोनों का अपने-अपने साहित्य का एक विशेष युग रहा है | दोनों आदर्शोन्मुख यथार्थवाद कथाकार माने जाते हैं | कुल मिलाकर दोनों के साहित्य में बहुत समानताएं दृष्टिगोचर होती है |